L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- 01
B.A. PAPER- 01
Psychology (Honours)
Fundamental Psychology

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant. Professor.
Guest. Teacher.
V. S. J. College, Rajnagar,
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018@gmail.com.

TOPIC- SCOPE OF PSYCHOLOGY

प्रत्येक विज्ञान का एक निश्चित क्षेत्र होता है। मनोविज्ञान के स्वरूप एवं उसकी परिभाषा (definition) से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान का मुख्य क्षेत्र मनुष्य की अनुभूतियों तथा व्यवहारों (behaviours) का उचित अध्ययन कर उन्हें सही रूप में समझना और उनका नियंत्रण करना है। इस तरह, यह स्पष्ट है कि मनोविज्ञान की सहायता से हम मनुष्यों के बारे में बहुत-बहुत ज्ञान प्राप्त कर न सिर्फ दूसरों को ही समझने की कोशिश करते हैं बल्कि अपने आपको भी समझने में समर्थ होते हैं। अर्थात् मनोविज्ञान की सहायता से हमें आत्मज्ञान एवं स्वयं के बारे में ज्ञान होता है। इस ज्ञान के फलस्वरूप हमें वातावरण की विभिन्न परिस्थितियों से अनुकूल अभियोजन स्थापित करने में काफी मदद मिलती है। जिससे व्यक्ति का जीवन सुखी हो जाता है।

मनोविज्ञान अपने उपयुक्त क्षेत्र को प्राप्त करने हेतु मानव के व्यवहारों से संबंधित समस्याओं एवं तथ्यों की खोज करने की दिशा में अग्रसर है तथा इस दिशा में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान का क्षेत्र दिनानुदिन बढ़ता जा रहा है। जीवन के विविध पक्षों का मनोवैज्ञानिक खोज हो रहा है। और व्यक्तिगत अभियोजन से लेकर सार्वभौम अभियोजन तक के विभिन्न तथ्यों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना इसका विषय बन गया है। इस पृष्ठभूमि में मनोविज्ञान के कुछ प्रमुख क्षेत्रों का उल्लेख यहाँ किया जायगा,

(1) सफल अभियोजन- मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र मानव-जीवन के सफल अभियोजन से संबद्ध तथ्यों का अध्ययन करना है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों द्वारा हमें व्यक्ति के पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक,

Ajanta
Scanned with CamScanner

धार्मिक एवं जीवन के अन्य क्षेत्रों में सफलतापूर्वक समायोजन करने और विभिन्न काम की पूर्ति करने की (सहायता) मिलती है। इसी तरह से प्राप्त ज्ञान के आधार पर मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समायोजित करने में समर्थ होता (सफल) मनोवैज्ञानिक अध्ययनों का ही यह परिणाम है कि आज हम व्यक्ति के व्यक्तिगत एवं सामाजिक समायोजन में होने वाली कठिनाइयों एवं उनके निराकरण के उपायों के बारे में जान पाए हैं तथा इनका उपयोग कर मानव-जीवन को समायोजन योग्य बनाने में समर्थ हुए हैं। इस क्षेत्र में किए गए अध्ययनों से प्राप्त ज्ञान का भंडार इतना विशाल हो गया है कि इसके आधार पर आजकल मनोविज्ञान की अलग शाखाएं विकसित हो चुकी हैं। जिन्हें क्रमशः असामान्य मनोविज्ञान एवं समाज मनोविज्ञान कहते हैं। असामान्य मनोविज्ञान के अंतर्गत असामान्यता के स्वरूप, कारण एवं उपचार के उपायों का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार, व्यक्ति के समायोजन-संबंधी कठिनाइयों का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन कर उन्हें पुनः समायोजन के योग्य बनाया जाना संभव हो सका है।

समाज मनोविज्ञान इस व्यक्ति के सामाजिक अनुभवों एवं व्यवहारों का विश्लेषण किया जाता है तथा व्यक्ति को अच्छा नागरिक बनाने और उनके पारस्परिक संबंधों को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है। इस क्रम में मनोवैज्ञानिक व्यक्ति और व्यक्ति के बीच के संबंधों का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं।

(ii) विकासात्मक अध्ययन में — मनोविज्ञान का एक और महत्वपूर्ण योगदान बालकों के विकासात्मक पहलुओं का अध्ययन करने से है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों की मदद से हम बालकों के विकास में उत्पन्न कठिनाइयों की समस्याओं के कारणों का पता लगाते हैं तथा उचित विकास का मार्गदर्शन भी करते हैं। मनोवैज्ञानिक बालकों के विकास की प्रक्रिया का गर्भावस्था से

Scanned with CamScanner

लेकर परिपक्वता की अवस्था तक अध्ययन करते हैं तथा इस संबंध में भविष्यवाणी करना, उनके व्यवहारों के उचित विकास हेतु नियंत्रित करना एवं सही मार्गदर्शन देना उनका मुख्य उद्देश्य होता है।

(3) शिक्षा के क्षेत्र में — इतना ही नहीं, आजकल मनोविज्ञान के प्रयोग शिक्षा (education) उद्योग-धंधों, व्यापार, कानून एवं अपराध इत्यादि क्षेत्रों में भी हो रहा है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक इन विभिन्न क्षेत्रों की समस्याओं का अध्ययन करने एवं उनके समाधान के उपायों की खोज करने में प्रशंसनीय सफलता प्राप्त कर रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग कर आजकल बालकों के उनकी योग्यता एवं अभिरुचि के अनुसार शिक्षा देने की व्यवस्था होने लगी है तथा विभिन्न प्रकार की मानसिक त्रुटियों से पीड़ित बालकों के लिए उपयुक्त शिक्षा दी जाने लगी है। इससे शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाने में काफी सहायता मिली है।

(4) उद्योग-धंधों में — मनोविज्ञान का उद्योग-धंधों के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान है। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के फलस्वरूप श्रम की बरबादी को रोकने में काफी सहायता मिली है। साथ-ही-साथ यह मनोवैज्ञानिक अध्ययनों का ही परिणाम है कि आजकल कामों के अनुसार व्यक्ति तथा व्यक्ति के अनुसार काम का चुनाव किया जाने लगा है। इससे श्रमिक एवं मालिक दोनों लाभान्वित हुए हैं। इसके अतिरिक्त औद्योगिक शांति की स्थापना, दुर्घटनाओं के मनोवैज्ञानिक कारणों का पता लगाकर नियंत्रित करने, मजदूर की कार्यक्षमता के बढ़ाने आदि समस्याओं के समाधान में भी मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से बहुत अधिक मदद मिलती है।

(5) जीवन के अन्य क्षेत्रों में — इसी तरह व्यापार, कानून एवं अपराध, सामान्य अंतर्राष्ट्रीय संबंध, युद्ध इत्यादि क्षेत्रों में भी प्रतिदिन इस मनोविज्ञान का उपयोग होते देखते हैं।

तथा इन क्षेत्रों में नए-नए शोधकार्य होने लगे हैं।
मनोविज्ञान के क्षेत्रों के संबंध में ऊपर जो व्याख्या किया गया है। उससे यह स्पष्ट विदित होता है कि मनोविज्ञान का क्षेत्र काफी ही विस्तृत है। सच तो यह है कि मानव-जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है। जहाँ मनोवैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो रहा हो अथवा इसके उपयोग न किया जाता हो। हालांकि, मनोविज्ञान एक अपेक्षाकृत नया विज्ञान है। फिर भी इसका प्रवेश हमारे जीवन के प्रायः प्रत्येक क्षेत्र में हो चुका है। तथा विभिन्न क्षेत्रों में नए-नए अनुसंधान हो रहे हैं। यही वजह है कि अब मनोवैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग मनुष्यों के व्यवहार एवं अनुभूतियों को समझने के अतिरिक्त पशुओं के व्यवहारों को समझने के लिए भी किया जाने लगा है। यही कारण है कि अब मनोविज्ञान की कई अन्य शाखाएँ विकसित हो गयी हैं। जिनके बारे में काफी व्याख्या किया जा रहा है।
मनुष्य केवल जैविक प्राणी नहीं वह एक सामाजिक प्राणी भी है। इसलिए मानव को इसके समाज से पृथक नहीं किया जा सकता है। मनुष्य समाज में ही जन्म लेता है। समाज में ही पलता है और जब तक जीवित रहता है वह दूसरे लोगों से घिरा रहता है। वह अपनी शारीरिक एवं अन्यान्य आवश्यकताओं की पूर्ति भी समाज में ही करता है।

Dr. Pramod kumar sahu,
Date - 15/09/2020,
Sub - Psychology